BA-I
Paper – I
Unit – 7

Date 08/09/2020

Page-1

Dr. Raj Gopal
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar.

Nyaya : Inference (Lecture-3)

न्याय अनुमान प्रमाण व्याख्यान-3

कल के व्याख्यान में परार्थानुमान के पाँच अवयवों की विस्तृत चर्चा की गयी थी। इसे पंचावयव अनुमान कहते हैं। पंचावयव अनुमान के विभिन्न वाक्यों को एक उदाहरण द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है।–

(i) पर्वत पर आग है – प्रतिज्ञा

(ii) क्योंकि पर्वत पर धुआँ है – हेतु

(iii) जहाँ जहाँ धुआँ होता है वहाँ-वहाँ आग होती है, जैसे रसोईघर में → उदाहरण सहित व्याप्ति वाक्य

(iv) पहाड़ पर धुआँ है – उपनयन

(v) इसलिए पहाड़ पर आग है – निगमण

पाश्चात्य न्याय वाक्य और पंचावयव अनुमान में निम्नलिखित अंतर है। पाश्चात्य न्याय वाक्य में तीन ही वाक्य होते हैं। वे तीन वाक्य है – वृहत वाक्य, लघु वाक्य, और निष्कर्ष परन्तु पंचावयव अनुमान में पाँच वाक्य होते हैं। प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनयन और निगमण। पंचावयव अनुमान का व्याप्ति वाक्य पाश्चात्य न्याय के वृहत वाक्य से मेल खाता है।

पाश्चात्य न्याय वाक्य में उदाहरण का कोई स्थान नहीं है परन्तु पंचावयव अनुमान में निगमन को ~~सबल~~ बनाने के लिए उदाहरण का प्रयोग होता है। पाश्चात्य न्याय वाक्य में निष्कर्ष का तीसरा स्थान होता है। वहीं पंचावयव अनुमान में निष्कर्ष प्रथम तथा पाँचवे वाक्य में आता है। पंचावयव अनुमान में पाँच वाक्य रहने के कारण पाश्चात्य न्याय से भारतीय न्याय का निष्कर्ष काफी मजबूत होता है।

अनुमान का आधार

अनुमान का मूल उद्देश्य पक्ष और साध्य के बीच संबंध स्थापित करना है। इसके लिए दो बातें आवश्यक हैं। (i) पक्ष (Minor Term) और हेतु का संबंध (ii) साध्य (Major Term) और हेतु (Middle Term) का व्याप्ति संबंध। पर्वत पर आग है इसे प्रमाणित करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि पर्वत पर धुआँ है तथा धुआँ और आग में व्याप्ति संबंध है।

हेतु (Middle Term) और साध्य (Major Term) के व्यापक संबंध को ही व्याप्ति कहते हैं। व्याप्ति विशेष प्रकार का संबंध होता है, यह अनिवार्य एवं नित्य संबंध होता है। व्याप्ति से दो वस्तुओं के आपसी संबंध का बोध होता है। इसमें एक को व्यापक तथा दूसरे को व्याप्य कहते हैं। उदाहरण के लिये आग। धुआँ में अनिवार्य संबंध रहता है। यहाँ आग व्यापक कहा जायेगा क्योंकि यह सदा धुआँ के साथ रहता है। धुआँ को व्याप्य कहा जायेगा क्योंकि धुआँ ही वह वस्तु है जिसके साथ आग रहती है। हम देखते हैं कि आग ने धुआँ का ज्ञान पाना आवश्यक नहीं है, क्योंकि बहुत स्थानों पर धुआँ के बिना भी आग होता है। परन्तु धुआँ से हमें आग का बोध होता है। सभी स्थान पर जहाँ धुआँ है वहाँ आग रहती है। इस प्रकार जिसकी व्याप्ति रहती है उसे व्यापक कहते हैं, जिसमें व्याप्ति रहती है उसे व्याप्य कहते हैं। जैसे जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग है। इसमें आग व्यापक है धुआँ व्याप्य है। व्यापक को साध्य तथा व्याप्य को हेतु (Middle Term) कहा जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हेतु और साध्य के बीच जो संबंध होता है उसे व्याप्ति कहते हैं। अनुमान का आधार व्याप्ति है।

Scanned with CamScanner